विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

नई पीढ़ी को अपने फ़ैसले करने की आज़ादी दीजिए

कहा जाता है कि हमारी दुनिया में एक ही चीज़ स्थायी है, और वह है परिवर्तन! दुनिया में सब कुछ बदलता रहता है और हम भी उस बदलाव को देर-सबेर स्वीकार कर ही लेते हैं। यह मनुष्य का स्वभाव है कि शुरू-शुरू में वह हर बदलाव के प्रति नकार का भाव रखता है परंतु कालांतर में उसी बदलाव को स्वीकार कर उसके बाद आए बदलावों के विरोध में व्यस्त हो जाता है। यह सब देखना बहुत रोचक हो सकता है। आप खान-पान, वेश भूषा, रीति-रिवाज़, कला-संस्कृति सब में इन बदलावों को देख सकते हैं। बहुत पीछे न भी जाएं तो यह याद करें कि पिछली शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में किस तरह का वेश विन्यास होता था और आज उसका रंग रूप कितना बदल गया है! ऐसा ही बदलाव आप भाषा के मामले में भी देख सकते हैं। अगर बदलाव न हुआ होता तो संस्कृत (और उससे भी पहले वैदिक) से लगाकर आज की भाषा तक की यात्रा न हुई होती। इस तरह के बदलाव दुनिया भर की भाषाओं में देखे जा सकते हैं। ऐसे ही बहुत सारे बदलाव हमारी सामाजिक व्यवस्था में भी हुए हैं। बहुत सारी चीज़ों के ऊपरी नाम तो जस के तस रह गए हैं लेकिन उनका भीतरी स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। उदाहरण के रूप में परिवार को ही लीजिए। भारतीय समाज में परिवार व्यवस्था का बहुत महत्व है। लेकिन आज हम जिस तरह के परिवार देखते हैं क्या वे परिवार ठीक वैसे हैं जैसे आज से सौ-पचास बरस पहले थे? संयुक्त परिवार का केवल नाम भर रह गया है। और परिवार के भीतर भी पारस्परिक संबंधों का स्वरूप बहुत बदल चुका है। पिछले समय में परिवार के मुखिया का जो रौब-दाब और रुतबा हुआ करता था वह अब केवल क़िस्सों में बचा रह गया है। यह बात स्त्री और पुरुष दोनों के बारे में कही जा सकती है। बीते ज़माने की सास अब कहां देखने को मिलेगी? आज परिवार के भीतर भी रिश्ते अधिक प्रजातांत्रिक और समता मूलक हो गए हैं। कल जिन बाप-बेटों में कोई संवाद नहीं होता था आज उनमें खुलकर बात होने लगी है। अंठाज़ों के ज़माने के जेलर नुमा बाप अब अपवाद होकर रह गए हैं।

परिवार के स्वरूप में आए बदलाव के मूल में रोज़गार की स्थितियों की भी बहुत बड़ी भूमिका है। पहले जहां आम तौर पर वंशानुगत रूप से चले आ रहे व्यवसाय में ही सारी संभावनाएं सिमटी हुई थीं, आज शिक्षा के प्रसार से यह बहुत आम हो गया है कि नई पीढ़ी अपने पैतृक काम को छोड़ अपने लिए नए क्षितिज तलाश करे। लोग गांवों से निकल कर शहरों और देश से निकल कर विदेश जाने लगे हैं। विदेश की बात पर यह भी याद आए बग़ैर नहीं रहता है कि एक समय वह था जब विदेश जाना बुरा माना जाता था और विदेश जाने का अपराध करने वाले को प्रायश्चित करना होता था, उसके बाद वह समय आया जब विदेश जाना गर्व और उपलब्धि माना जाने लगा, और अब वह समय आ गया है जब विदेश जाना बहुत आम हो चुका है। इस शिक्षा, रोज़गार और विदेश गमन का असर हमारी सामाजिक व्यवस्था पर भी पड़ा है। एक ज़माना था जब बाल विवाह बहुत आम हुआ करता था। अब विवाह की आयु बहुत आगे जा चुकी है। नई पीढ़ी अपने कैरियर को लेकर इतनी चिंतित है कि वह विवाह को स्थगित करती रहती है और तीस की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते विवाह करना कोई अपवाद नहीं रह गया है। न केवल इतना बहुत सारे युवा विवाह संस्था को ही अप्रासंगिक मानने लगे हैं और उनके इस सोच को भी समाज नेआंशिक रूप से स्वीकार किया है। प्रेम विवाह और अंतरजातीय विवाह तो इतने आम हो ही गए हैं कि अत्यंत परंपरा प्रिय परिवारों में भी इन्हें स्वीकार कर लिया जाने लगा है, अब तो लिव इन रिलेशनशिप और सेम सेक्स मैरिज भी अपवाद और अजूबे नहीं रह गए हैं।

आज जीवन बहुत बदल गया है। बाल विवाह बीते ज़माने की बात हो चुके हैं। बच्चे बड़ी उम्र में, जब वे खासे परिपक्व हो जाते हैं, विवाह करने लगे हैं। वे देश-विदेश में ऐसे संस्थानों में काम करते हैं जहां युवक-युवतियों को बहुत सारा समय एक साथ बिताना होता है। और भी अनेक कारणों से इनके बीच मेल मिलाप के, एक-दूसरे को जानने-समझने के, और पसंद-नापसंद करने के अवसर बहुत बढ़ चुके हैं।

लेकिन जहां यह सब हो रहा है, अर्थात बदलाव को सहज भाव से, भले ही थोड़े संकोच के साथ स्वीकार किया जाने लगा है, ऐसे लोग भी कम नहीं हैं जो इन बदलावों को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। ऐसे अनेक मां-बाप भी हमें अपने आस-पास मिल जाएंगे जिन्हें इस बात से तो कोई एतराज़ नहीं है कि उनके बच्चे खूब पढ़े-लिखें, इस बात से भी एतराज़ नहीं है कि उनके बच्चे अपने व्यवसाय या कैरियर में सुस्थापित होने के बाद, अर्थात तीस की उम्र के आस-पास पहुंच कर विवाह करें। इन सब बदलावों को स्वीकार कर लेने वाले मां-बाप भी यह चाहते हैं अपने बच्चों के विवाह के बारे में सारे फैसले वे ही करें, उनके बच्चे नहीं। अगर बच्चे कोई फैसला करना चाहते हैं तो वे बुरी तरह से आहत या कुपित हो जाते हैं। विवाह के मामले में उनके तीस बरस की आसपास के उम्र के बच्चे भी उन्हें नादान ही दिखाई देते हैं। वे इस बात पर भरोसा करने को तैयार नहीं होते हैं कि खूब शिक्षित और अपने कैरियर में कामयाब बच्चे अपने विवाह के बारे में भी सही फैसला कर सकते हैं। इस मामले में वे चाहते हैं कि उनके बच्चे उनके सामने दुधमुंहे बन जाएं और वे बीते समय की मानिंद थाली में बिठाकर गुड्डे-गुड्डियों की तरह उनका विवाह कर दें। ऐसे में बच्चों के सामने दो ही विकल्प रह जाते हैं। या तो वे अपना मन मारकर मां-बाप की आज्ञा को शिरोधार्य कर अपने चयन को कूड़े के ढेर पर फेंक दें, और या फिर मां-बाप की आज्ञा का उल्लंघन कर और क्या इसी दिन के लिए हमने तुम्हें पाल पोस कर बड़ा किया था की व्यथा को अनसुना कर अपनी मनमानी कर लें। दोनों ही स्थितियां सुखद नहीं हैं!

इस तरह के मां-बाप अपने बच्चों के लिए और भी कई तरह की मुसीबतें खड़ी कर देते हैं। मसलन उनके लिए जाति उप जाति का सवाल बहुत महत्वपूर्ण होता है। चारों तरफ की दुनिया चाहे कितनी भी बदल चुकी हो, वे चाहते हैं कि उनके बच्चे शादी के मामले में खानदानी चलन और सोच की लक्ष्मण रेखा न लांघें। इससे भी आगे, यह देखकर आश्चर्य होता है और क्षोभ भी कि बहुत सारे मां-बाप अब भी यही चाहते हैं कि भले ही उनके बच्चे कहीं भी, किसी भी अन्य प्रदेश में, बल्कि विदेश में भी नौकरी करें, शादी तो वे अपने गांव-कस्बे-शहर के परिवार में ही करें। वे इस बात के लिए कभी तैयार नहीं होते हैं कि उनके बेटे बेटी किसी अन्य कस्बे-शहर से अपना जीवन साथी चुनें। यह परंपरा-प्रेम न होकर कूप मण्डूकता है।

आज जीवन बहुत बदल गया है। बाल विवाह बीते ज़माने की बात हो चुके हैं। बच्चे बड़ी उम्र में, जब वे खासे परिपक्व हो जाते हैं, विवाह करने लगे हैं। वे देश-विदेश में ऐसे संस्थानों में काम करते हैं जहां युवक-युवतियों को बहुत सारा समय एक साथ बिताना होता है। और भी अनेक कारणों से इनके बीच मेल मिलाप के, एक-दूसरे को जानने-समझने के, और पसंद-नापसंद करने के अवसर बहुत बढ़ चुके हैं। आज के युवा बीते कल की तुलना में बहुत ज़्यादा समझदार, व्यावहारिक और निर्णय सक्षम हैं। ऐसे में उनके निर्णयों को सिरे से खारिज़ करना किसी भी तरह से तर्क संगत और व्यावहारिक नहीं कहा जा सकता। बहुत सारी रूढ़ियां अब शिथिल और अप्रासंगिक होती जा रही हैं। जाति,धर्म, भाषा, खान-पान, रंग, प्रदेश, देश-विदेश आदि के बारे में सोच बहुत बदल चुका है। सबसे बड़ी बात यह कि परिपक्व आयु में पहुंचे युवा जब कोई निर्णय करते हैं तो वे अपना सारा भला-बुरा सोच कर ऐसा निर्णय करते हैं। उनके निर्णय को अस्वीकार कर उन पर अपनी परंपराओं का बोझा डालना किसी भी तरह से तर्कसंगत और मानवीय नहीं कहा जा सकता। हमें जो जीवन मिला था, उसे हमने अपने समय और परिस्थितियों के अनुसार जी लिया। अब समय बदल चुका है तो हमें आज की पीढ़ी पर उन रूढ़ियों को नहीं लादना चाहिए। इन सारी बातों को इस तरह भी देखा जाना चाहिए कि पिछली पीढ़ी अपने जीवन का बहुलांश जी चुकी है, जबकि आज की पीढ़ी को उसके जीवन का बहुलांश अभी जीना है। इसी के साथ यह बात भी कि जो मां-बाप अपने बच्चों के फैसलों को यह कहते हुए वीटो करते हैं कि यदि ऐसा हुआ तो वे (बच्चे) आगे चलकर पछताएंगे, क्या वे दावे के साथ कह सकते हैं कि यदि उनका किया फैसला मान लिया गया तो उसके ग़लत होने की कोई संभावना है ही नहीं! इस बात को समझा जाना चाहिए कि आज की पीढ़ी बहुत सोच-समझकर अपने फैसले करती है, और फिर भी अगर वह फैसला भविष्य में ग़लत साबित होता है, तो वही उस ग़लती के दुष्परिणाम भी भुगतेगी। मेरा मानना है कि उम्र के एक मुकाम पर आकर हमें अपने बाद वाली पीढ़ी को अपने जीवन से जुड़े फैसले ख़ुद करने की आज़ादी दे देनी चाहिए।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

टमाटर से सबक ले "मार्केट इंटरवेंशन" को तैयार रहना जरुरी

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

लगभग हर साल अन्नदाता को रुलाने वाले टमाटर ने इस बार आम नागरिकों खासकर गृहणियों को बुरी तरह से झकझोर के रख दिया है। अब तक अनुभव यही रहा है कि प्याज आम उपभोक्ताओं को रुलाता रहा है तो सरकार बनने-बनाने में भी प्याज की अहम् भूमिका रही है। संभवत: यह पहला मौका होगा जब टमाटर ने भाव दिखाये हैं और यहां तक कि देश के अधिकांश हिस्सों में टमाटर के भाव डेढ़ सौ से दो सौ रु. तक को छूने व कई स्थानों पर तो इससे अधिक आसमान छूने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। हालात यहां तक देखने को मिले हैं कि मण्डियों से टमाटर की चोरियों के समाचार मिले तो टमाटर की सुरक्षा के लिए बॉक्सर्स की सेवाएं भी लेने के समाचार मीडिया की सुर्खियां बने हैं। हांलाकि अब टमाटर के भावों में उतार का दौर शुरु हो गया है तो केन्द्र सरकार भी एनसीसीएफ और नेफैड के माध्यम से आगे आई है। हांलाकि संभवत: अदरक के भाव भी चार सौ के आसपास जाने का यह पहला रेकार्ड होगा पर टमाटर ने सीधे-सीधे आम आदमी को प्रभावित किया है। पिछले दिनों ब्रिटेन में एकाएक भाव बढने वाली वस्तुओं को कुछ समय तक नहीं खरीदने की सलाह सरकार द्वारा जारी की गई पर मजे की बात यह है कि हमारे देश में हालिया एक सर्वे के अनुसार टमाटर द्वारा लाल-नीली आंखें दिखाने के बावजूद केवल 15 प्रतिशत लोगों ने टमाटर को कुछ समय के लिए रसोई से बाहर रखने यानी की नहीं खरीदने का निर्णय किया, वहीं 82 फीसदी लोगों ने भले ही महंगा रहा हो पर टमाटर की खरीद से परहेज नहीं किया।

दरअसल अब तक का अनुभव यह रहा है कि सीजन में एक समय ऐसा आता है जब टमाटर के मण्डियों में भाव लागत तो छोड़ो मण्डी में लाने ले जाने की लागत भी पड़ता नहीं खाती और हाईवे के किनारों पर टमाटर के ढ़ेर के ढेर बिखरे हुए देखे जाते रहे हैं। हांलाकि करीब करीब इस समय टमाटर के भाव बढ़ते हैं पर इतने अधिक भावों में तेजी पहले लगभग नहीं ही देखी गई है। वैसे तो टमाटर की खेती समूचे देश में होती है पर आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, तमिलनाडू, उड़ीस गुजरात, पश्चिमी बंगाल आदि प्रमुख टमाटर उत्पादक प्रदेश हैं। दुनिया में टमाटर के उत्पादन में चीन शीर्ष पर है और एक मोटे अनुमान के अनुसार चीन में टमाटर का 5 करोड़ 64 लाख टन से अधिक सालाना उत्पादन होता है। चीन के बाद भारत टमाटर का सबसे अधिक यानी की दूसरे नंबर का प्रमुख उत्पादक प्रदेश है। मोटे अनुमान के अनुसार देश में करीब 4 लाख टन टमाटर का सालाना उत्पादन होता है। यदि कुछ दिनों को छोड़ दिया जाए तो टमाटर के भावों को लेकर इतनी मारामारी नहीं रहती है। पर इस साल तो टमाटर ने सारे रेकार्ड तोड़ दिए हैं।

टमाटर दक्षिण अमेरिका के एण्डीज और मैक्सिको से स्पेनिस कॉलोनीज होते हुए दुनिया के देशों में पहुंचा है। बदलते समय में कम से कम हमारे देश में छाछ, केरी, अमचूर, काचरी आदि परंपरागत खटाई की जगह सभी सब्जियों में टमाटर ने बना ली है। टमाटर के बिना सब्जी के स्वाद की कल्पना लगभग नहीं के बराबर रह गई है तो दूसरी और टमाटर केचअप, प्यूरी और शॉश का अपना बड़ा बाजार विकसित हो चुका हैं। दरअसल औषधीय गुण के कारण भी टमाटर की मांग बढ़ी हैं। टमाटर में विटामिन सी, बी, के के साथ ही कोलिन आदि प्रचुर मात्रा में हैं। इसलिए स्वास्थ्य की दृष्टि से भी टमाटर की अपनी अहमियत है। प्याज-टमाटर ऐसे हैं जो आलू आदि दूसरी सब्जियों के साथ तो काम आते ही हैं केवल और केवल टमाटर और प्याज ही ऐसे हैं जो गरीब से गरीब की थाली में लगावन का काम करता है तो अमीर से अमीर की रसोई भी इनके बिना अधूरी है। ऐसे में टमाटर के भाव आसमान छूने से सीधे सीधे आमआदमी का प्रभावित होना स्वाभाविक है।

अब सवाल दो टके का यह हो जाता है कि ऐसी सरकारों की क्या बाध्यताएं होती हैं कि एकाएक भाव बढ़ने पर आम नागरिकों को भगवान के भरोसे छोड़कर किनारे हो जाती है। हांलाकि लाख उत्पादन बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हो पर अभी भी देश में फसलोत्तर आधारभूत संरचनाओं की कमी बरकरार है। यही कारण है कि किसानों को मजबूरन अपने उत्पाद को सड़क के हवाले करना पड़ता है। हर हालात में फायदा होता है तो केवल और केवल बिचौलियों को होता है। पहले कृतिम अभाव पैदा किया जाता है और फिर कोल्ड स्टोरेज से थोड़ी मात्रा में बाजार में लाया जाता है ताकि ज्यों-ज्यों भाव बढ़ते जाएं त्यों-त्यों इनका मुनाफा बढ़ता जाएं और आमआदमी पिसता चला जाए। आखिर ऐसा क्यों होता है? यह इसलिए भी जरुरी हो जाता है कि सरकार की बाजार पर निगरानी रखने वाली टीम आखिर क्या करती रहती है। सरकार के पास बुवाई से लेकर उत्पादन तक के आंकड़े रहते ही हैं, इसके साथ ही कोल्ड स्टोरेज में जमा की भी जानकारी रहती है। फिर ऐसे कौन से कारण होते हैं कि एक समय खुदरा में दस से बीस रुपए किलो बिकने वाला टमाटर दो सौ के आंकड़े को छू जाता है। यह टमाटर ही नहीं आलू, प्याज, लहसुन आदि सभी पर लागू होता है। अब तो सरकार द्वारा बागवानी फसलों के लिए रेल भी चला दी है। इससे बागवानी फसलों को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाना आसान हुआ है। पर अभी इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना है। कोल्ड स्टोरेज की चैन बनानी होगी तो वातानुकूलित कंटेनरों की व्यवस्था भी सरकार को करनी होगी।

टमाटर के भावों में तेजी के साथ ही एक बात साफ हो गई है कि सरकार का कहीं ना कहीं बाजार निगरानी तंत्र कमजोर है। पूरे देश में टमाटर के भावों को लेकर हाहाकार मचा तब जाकर नेफैड और एनसीसीएफ की नींद खुली, नही तो बाजार आंकलन के अनुसार पहले ही इन्हें सतर्क हो जाना चाहिए था। बाजार हस्तक्षेप पहली आवश्यकता है। उत्पादक किसान और उपभोक्ता आमआदमी दोनों के ही हितों की रक्षा करना जरुरी हो जाता है। दूसरे ऐसी परिस्थितियों में सरकार की प्रजेंस मात्र से ही हालात में सुधार होने लगते हैं। साफ है सरकार के 80 रु. किलो टमाटर उपलब्ध कराने के दूसरे दिन से ही कौन सा कमाल हो गया कि टमाटर के मण्डियों में भाव नीचे आ गए। इसलिए समय रहते बाजार हस्तक्षेप जरुरी हो जाता है। अन्यथा कालाबाजारी और जमाखोरी को बढ़ावा मिलता है और उत्पादक और उपभोक्ता दोनों ही पिसते हैं। सरकार की बदनामी का कारण बनता है वह अलग। इसलिए एक प्रोएक्टिव टीम होनी चाहिए जो बाजार के हालातों पर नजर रखे और अप्रत्याशित होने से पहले ही बाजार के हालातों को नियंत्रण में ले सके ताकि आमनागरिक जमाखोरों के चंगुल में ना आ सके। दरअसल मार्केट इंटरवेंशन के लिए सरकार समय पर सक्रिय हो जाए तो मुनाफाखोरों और जमाखोरों को आसानी से सबक सिखाया जा सकता है वहीं आम नागरिकों को भी समय पर राहत मिल सकती है। इसके लिए मार्केट इंटरवेंशन की सख्त नीति के साथ ही बाजार की मांग के अनुसार समय पर फैसले लेने होंगे ताकि बाजार पर मुनाफाखोरों और जमाखोरों का नियंत्रण नहीं हो सके।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

जालौर के महिला थाना के सामने जर्जर पोल से हादसे की आशंका

प्राचीन पोल (दरवाजा) गत दिनों आये बिपरजॉय तूफान से क्षतिग्रस्त हो गई थी

जालोर, (कासं)। जालोर शहर के भीतर सांडबाव के निकट महिला पुलिस थाना के सामने स्थित प्राचीन पोल (दरवाजा) गत दिनों आये बिपरजॉय तूफान से क्षतिग्रस्त हो गई थी। पोल की मरम्मत करवाने को लेकर मुख्यमंत्री को ज्ञापन देने के करीब एक माह बीत जाने के बाद भी पोल की हालात जस की तस बनी हुई है। जबकि 26 से 29 जुलाई तक इसी पोल में मोर्हरम पर्व को लेकर ताजिया रखे जायेंगे। जहां काफी संख्या में लोगों की भीड़ एकत्रित होगी। लेकिन प्रशासन की उदासीनता के चलते जर्जर पोल की मरम्मत नहीं करवाने से यह पोल हादसे को न्यौता दे रही है।

जालोर में गत दिनों आये बिपरजॉय तूफान के चलते शहर के भीतर सांडबाव के निकट स्थित प्राचीन पोल बारिश से क्षतिग्रस्त हो गई थी। पोल के सबसे आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त होकर नीचे गिर गया। वही पोल के पास की दीवार भी टूट गई है। इस पोल के अंदर से गुजरने पर महिला पुलिस थाना, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शहरी सहित अन्य स्कूल आई होने के साथ गैबनशाह गाजी दरगाह जाने का रास्ता होने से काफी लोगों का इस पोल के नीचे से प्रतिदिन गुजरना होता है। पोल पूरी तरह से क्षतिग्रस्त होने पर 21 जून को मुख्यमंत्री के बिजरजॉय तूफान का जायजा लेने जालोर आगमन पर मुस्लिम समाज द्वारा ज्ञापन देकर क्षतिग्रस्त पोल की मरम्मत करवाने की मांग की गई थी। जिस समय मुख्यमंत्री ने भी पोल को जल्द ही मरम्मत करने के आदेश जिला कलैक्टर को दिये थे। लेकिन एक माह होने के बाद भी जिला कलैक्टर की उदासीनता के चलते शहर की प्राचीन पोल की मरम्मत तक नहीं गई है। जिससे आगामी दिनो में मोहर्रम पर लोगों की इस पोल में काफी भीड़ उमड़ेगी तथा क्षतिग्रस्त पोल से हादसा होने का अंदेशा बना हुआ है। इस पोल के नीचे से महिला पुलिस थाना के पुलिस कर्मी भी बड़ी मुश्किल से निकलते हैं। वहीं स्कूल के बच्चों को भी इस पोल से गुजरने में खतरा उठाना पड़ रहा है। वहीं स्कूल प्रशासन ने मुख्य रोड़ पर आपातकालीन रास्ता खोला है, जो मुख्य रोड से खुलने से वाहनो से बच्चो के दुर्घटना होने की संभावना बनी हुई है। वहीं दरगाह में जाने वाले जायरिनों को भी इस पोल के नीचे से गुजरने में अपनी जान जोखिम में डालनी पड रही है। यदि समय रहते प्रशासन ने जल्द ही पोल की मरम्मत नहीं करवाई तो इस पोल से कोई बड़ा हादसा हो सकता है। जिला प्रशासन की उदासीनता के चलते शहर की भीतर स्थित प्राचीन पोल का पुनर्निर्माण या मरम्मत नहीं करने से लोगो में रोष देखा जा रहा हैं।

- **26 से 29 जुलाई तक इसी पोल में मोर्हरम पर्व को लेकर ताजिया रखे जायेंगे**

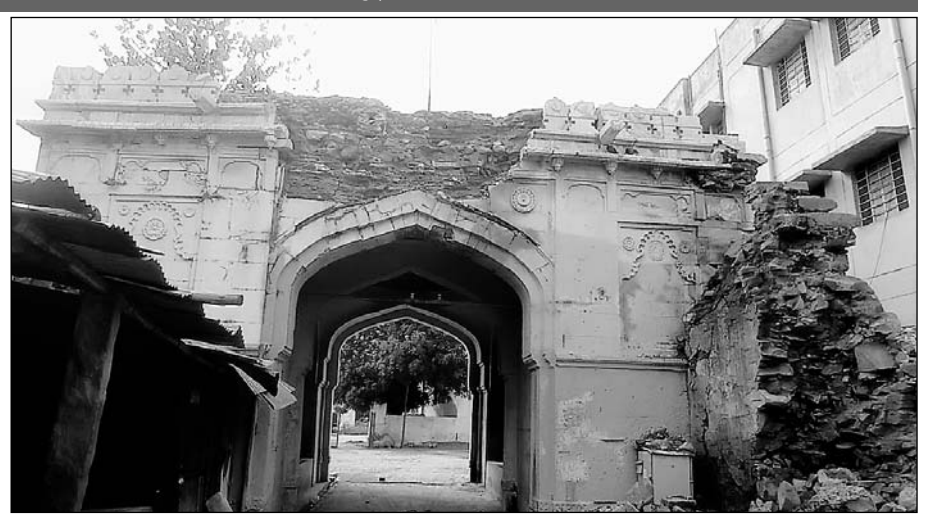

महिला पुलिस थाना के सामने स्थित क्षतिग्रस्त प्राचीन पोल (दरवाजा) हादसे को न्यौता दे रही हैं।

राजगढ़ धाम पर हजारों श्रद्धालु उमड़े

अजमेर, (कासं)। अजमेर जिले के सुप्रसिद्ध सर्वधर्म धार्मिक स्थल श्री मसाणिया भैरव धाम राजगढ़ पर अधिक मास के चलते रविवार को श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ पड़ी। भीड़ का आलम यह था कि श्रद्धालुओं की संख्या बीस हजार के आंकडे को भी पार कर गई।

धाम के प्रवक्ता अविनाश सेन ने बताया कि धाम पर श्रद्धालुओं का आगमन शनिवार दोपहर से ही प्रारम्भ हो गया था। रविवार को चम्पालाल महाराज के सानिध्य में धाम पर लगभग तीन हजार से अधिक श्रद्धालुओं को स्वंच्छिक नशा मुक्ति का संकल्प दिलवाया। पुरूषो के साथ महिलाओं ने भी बढचढ कर नशा नहीं करने की प्रतिज्ञा कर नशे की वस्तुओं को महाराज के श्री चरणों में छोड़ा। प्रवक्ता सेन ने बताया कि धाम पर आए हुए श्रद्धालुओं के लिए श्री मसाणिया भैरवधाम राजगढ चैरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से शनिवार सांयकाल को सभी श्रद्धालुओं के लिये नि:शुल्क भोजन व पूरी रात नि:शुल्क चाय की व्यवस्था की गई। नशा मुक्त समाज को बढ़ावा देने के लिए राजगढ़ धाम पर पिछले कई दशकों से नशामुक्ति महाअभियान चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत श्रद्धालुओं को नशा मुक्त करने हेतु प्रेरित किया जाता है व उनसे संकल्प दिलाया जाता है। नशामुक्ति महाअभियान राजगढ़ भैरव धाम की पहचान बन चुका है।

रविवार को धाम पर डॉ एम जी अग्रवाल, डॉ चरण सिंह, डॉ. बालमुकुन्द जेथवाल, डॉ. रश्मि सिन्हा आदि ने धाम पर पहुँच कर बाबा भैरव माँ कालिका के दर्शन कर सर्वधर्म मनोकामनापूर्ण स्तम्भ की परिक्रमा करी व चम्पालाल महाराज से आशीर्वाद लिया। साथ ही मंदिर कमेठी की और से सभी चिकित्सकों का स्वागत सत्कार किया गया। धाम पर हजारों की भीड़ के चलते श्रद्धालुओं को अपनी बारी के लिये घण्टो तक इन्तजार करना पड़ा जिसके बाद सभी ने बाबा भैरव, माँ कालिका के दर्शन करते हुए सर्वधर्म मनोकामनापूर्ण स्तम्भ कर परिक्रमा कर चमत्कारी चिमटी प्राप्त करने के पश्चात मुख्य स्थान चक्की वाले बाबा के मंदिर पर राजा रानी कल्पवृक्ष के भी परिक्रमा की।

श्री मसाणिया भैरव धाम राजगढ़ पर अधिक मास के चलते रविवार को श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 24 जुलाई, 2023

प्रथम सावन मास (अधिक), शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, हस्त नक्षत्र रात्रि 10:12 तक, शिव योग दिन 2:51 तक, तैतिल करण दिन 1:43 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज कुमार योग सूर्योदय से दिन 1:43 तक है। रवियोग रात्रि 10:12 तक है। आज बुध मघा सिंह में रात्रि 4:32 पर प्रवेश करेगा। आज सावन वन सोमवार व्रत है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:31 तक, शुभ 9:12 से 10:52 तक, चर 2:14 से 3:54 तक, लाभ-अमृत 3:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:51, सूर्यास्त 7:16

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृष
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण और आवश्यक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

कुंभ
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।